कल्याणकारी अर्थशास्त्र तथा परेटो अनुकूलतम

PRESENTED BY

Indu Kumari.

Assistant. Professor, Dept. of Economics, B. N. College, Bhagalpur,

कल्याणवादी अर्थशास्त्र ,अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो सामाजिक कल्याण को अधिकतम करने की दृष्टि से आर्थिक नीतियों का विश्लेषण करता है। वास्तविक अर्थशास्त्र में आर्थिक सिद्धांतों एवं नीतियों का विश्लेषण किया जाता है ।जबकि कल्याणवादी अर्थशास्त्र में आर्थिक नीतियों की जांच की जाती है। आर्थिक कल्याण सामान्य कल्याण का वह भाग है जो कि प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से मुद्रा रूपी पैमाने से मापा जा सकता है

परेटो का कल्याणवादी अर्थशास्त्र

पीगु के अनुसार सामाजिक आर्थिक कल्याण समाज के व्यक्तियों को प्राप्त होने वाले उपयोगिताओ अथवा संतुष्टि का जोड़ है।

प्राचीन कल्याणवादी अर्थशास्त्री उपयोगिता को मापने मानते थे , जबकि नवीन कल्याण वादी अर्थशास्त्रियों के अनुसार उपयोगिता को मापा नहीं जा सकता इसकी तुलना की जा सकती है।परेटो का कल्याणवादीच विश्लेषण उपयोगिता के क्रम वाचक विचार पर आधारित है । इनका कल्याणवादी विश्लेषण केवल उत्पादन तथा विनमय क्षेत्रों तक ही सीमित है जिसके द्वारा उत्पादन तथा उसके वितरण को अधिकतम सामाजिक कल्याण के रूप में बनाने का प्रयत्न किया जाता है।

परेटो ने सामाजिक कल्याण को अधिकतम करने का एक जांच सिद्धांत प्रस्तुत किया जिसे कुछ अन्य नामों से भी जाना जाता हैः

1. पेरेटियन अनुकूलतम
2. परेटो का सर्वसम्मत नियम
3. परेटो का समाजिक अनुकूलतम
4. सामान्य अनुकूलतम

पेरेट अनुकूलतम की मान्यताएं

पैरेट ओ अनुकूलतम की मान्यताएं निम्नलिखित हैः

1. उपयोगिता एक क्रम वाचक तत्व है तथा प्रत्येक व्यक्ति के लिए कर्मवाचक उपयोगिता फलन दिया हुआ होता है।
2. उत्पादक या फॉर्म का उत्पादन फलन एक निश्चित अवधि के अंतर्गत दिया हुआ है।
3. एक व्यक्ति अपनी संतुष्टि को अधिकतम करना चाहता है।
4. उत्पादक किसे दी हुई लागत पर किसी वस्तु का अधिकतम उत्पादन करना चाहता है, ताकि उसका लाभ अधिकतम हो सके।
5. सभी वस्तुएं पूर्णता विभाज्य है तथा सभी व्यक्ति प्रत्येक वस्तु की एक निश्चित मात्रा का प्रयोग करते हैं।
6. पूर्ण प्रतियोगिता के कारण सभी उत्पादन के साधन पूर्णता गतिशील हैं।

उपयोगिता संभावना वक्र के माध्यम से सामान्य अनुकूलतम की व्याख्या

परेटो के सामान्य अनुकूलतम को सैम्युलसन द्‌वारा प्रस्तुत उपयोगिता संभावना वक्र द्‌वारा भी स्पष्ट किया गया है। उपयोगिता संभावना वक्र वस्तुओं के एक निश्चित समूह से दो व्यक्तियों द्‌वारा प्राप्त उपयोगिताओं के विभिन्न संयोग का बिंदुपथ है।

रेखा चित्र द्वारा व्याख्या

परेटो मानदंड के अनुसार P बिंदु से E,F, तथा G बिंदु की और कोई परिवर्तन सामाजिक कल्याण में होने वाली वृद्धि को दर्शाता है क्योंकि इस परिवर्तन से व्यक्ति A तथा B दोनों की उपयोगिताओं अथवा दूसरों को क्षति पहुंचाए बिना किसी एक की उपयोगिता में वृद्धि होती है । परेटो मापदंड के अनुसार EPF क्षेत्र के बाहर उत्पन्न होने वाले परिवर्तन के प्रभाव को नहीं मापा जा सकता।इस तरह LM वक्र के EF भाग पर स्थित सभी बिंदु परेटो अनुकूलतम की स्थितियां हैं, किंतु इन सभी स्थितियों में कौन सी स्थिति श्रेष्ठतम है मापदंड इस समस्या का उत्तर देने में असफल है।

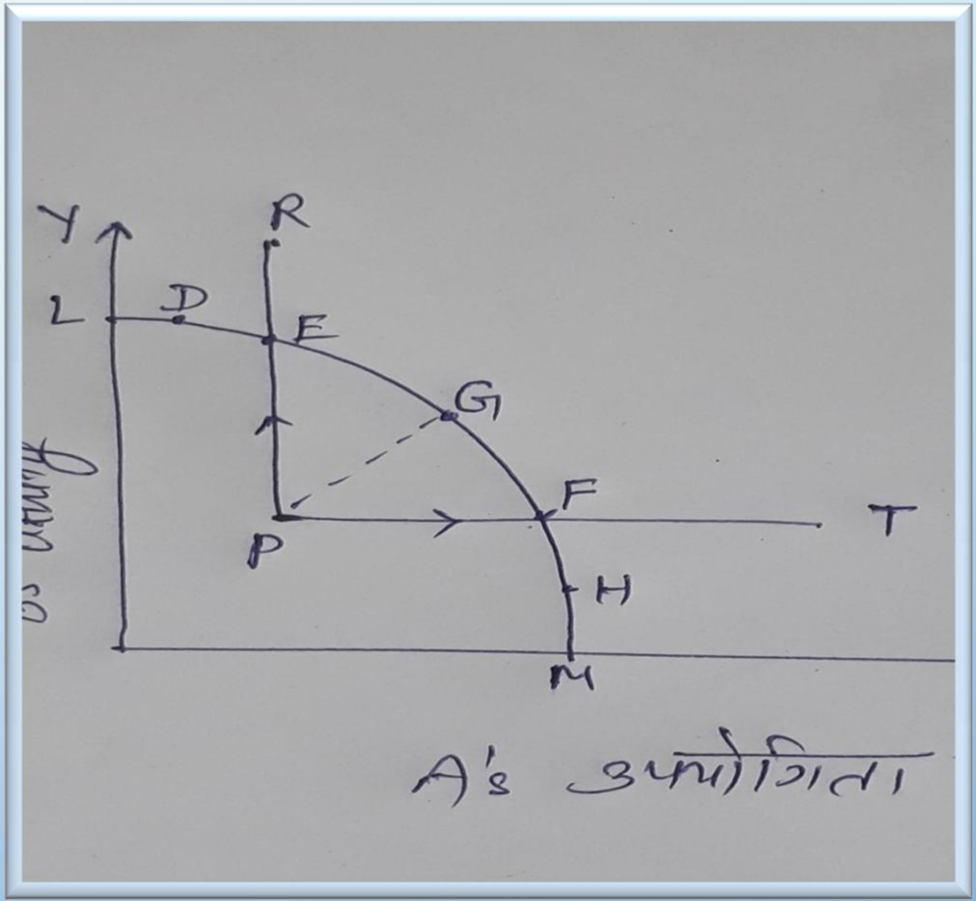

वस्तुओं का अनुकूलतम वितरण

वस्तुओं की मात्रा के विभिन्न उपभोक्ताओं में अनुकूलतम वितरण से संबंधित है इस दशा के अनुसार समाज में प्रत्येक व्यक्ति के लिए किन्ही 2 वस्तुओं के मध्य प्रतिस्पर्धा की सीमांत दर (MRS) समान होनी चाहिए।

किन्ही 2 वस्तुओं के मध्य प्रतिस्थापन की सीमांत दर किसी वस्तु के सीमांत इकाई के उपभोग में कमी होने से संतुष्टि में क्षति की पूर्ति के लिए आवश्यक अन्य वस्तु की मात्रा में वृद्धि होती है ताकि कल्याण का स्तर पहले की तरह यथावत रहे।

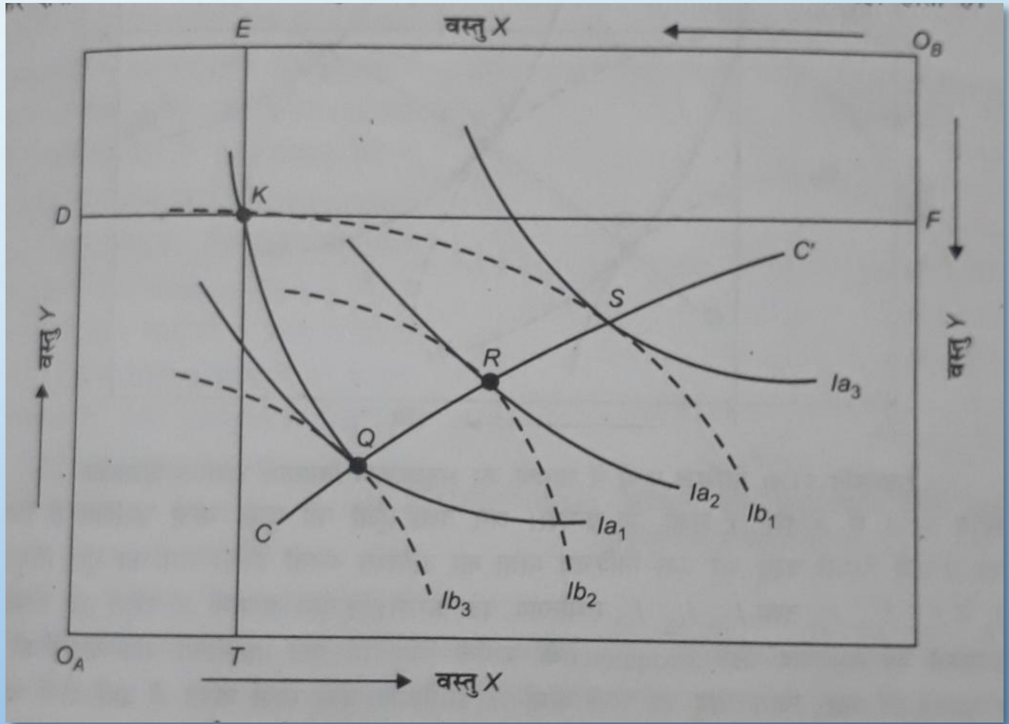

उपरोक्त रेखा चित्र से स्पष्ट है कि X या Y दो वस्तुओं का क्रमशः वितरण दो व्यक्तियों के बीच किया जा रहा है उपभोक्ता A का मूल बिंदु OA है और उपभोक्ता B का मूल बिंदु OB है। आइ ऐ 1, 2, 3 A व्यक्ति अधिमान वक्र को प्रदर्शित करती हैं। आई बी 1, 2, 3 व्यक्ति के अधिमान वक्र को प्रदर्शित करता है। CC वक्र प्रसंविदा वक्र (कॉन्ट्रैक्ट कव) है।

उदाहरणार्थ यदि दोनों व्यक्तियों द्वारा उपयोग की जाने वाली X तथा Yवस्तुओं की मात्रा K द्वारा प्रदर्शित है तो वह अनुकूलतम स्थिति नहीं होगी क्योंकि K से S अथवा K से Q वस्तु संयोग की ओर परिवर्तन होने से एक व्यक्ति का संतोष स्थिर रहते हुए दूसरे व्यक्ति के संतोष में वृद्धि होती है। इसी प्रकार K से R संयोग की और विवर्तन होने पर दोनों व्यक्तियों की कल्याण में वृद्धि होती है क्योंकि दोनों अपेक्षाकृत ऊंचे अधिमान वक्र पर जाने में सफल होते हैं।

चुकी अधिमान वक्र के प्रत्येक बिंदु पर ढाल प्रतिस्थापन की सीमांत दर प्रदर्शित करती है, अतः दोनों व्यक्तियों के लिए दो वस्तुओं के मध्य प्रतिस्थापन की सीमांत दर उनके अधिमान वक्रो स्पर्श बिंदुओं जो प्रसंविदा वक्र पर होते है।

किन्ही दो उपभोक्ताओं की दो वस्तुओं के सीमांत प्रतिस्थापन दर समान होने चाहिए अतः संतुलन की दशा में उपभोक्ता की कीमत रेखा उसके अधिमान वक्र को स्पर्श करना चाहिए।क्योंकि पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत सभी उपभोक्ताओं के लिए वस्तु की कीमत समान होती है। इसलिए किन्ही 2 वस्तुओं की सीमांत प्रतिस्थापन दर किन्ही दो उपभोक्ताओं के लिए समान होनी चाहिए। जैसा कि दाएं तरफ दी गई सूत्रों में दरशाया गया है।

साधनों का अनुकूलतम आवंटन की स्थिति में दोनों साधन अर्थात श्रम तथा पूंजी के मध्य तकनीकी प्रतिस्थापन की सीमांत दर समान होनी चाहिए। पूर्ण प्रतियोगिता में प्रत्येक उत्पत्ति साधन की कीमतें दी हुई होती है उत्पादन उस समय संतुलन की दशा में होता है जब वह साधनों के ऐसे सयोगं का प्रयोग करता है जिस पर समत्पावक्र तथा सम लागत वक्र एक दूसरे को स्पर्श करते हैं जैसा कि दाएं तरफ के सूत्रों से व्यक्त होता है।

पेरेट्टो संतुलन दशाओं को पेरेटियन कल्याण की सीमांत दशाएं अथवा प्रथम श्रेणी की दशाएं कहा जाता है।

पेरेटियन संतुलन की दशाएं

- **पूर्ण प्रतियोगिता एवं वस्तुओं के अनुकूलतम आवंटन की दशा**

उपभोक्ता A की अधिकतम संतुष्टि दशा

$$[MRS_{xy}]_A = \frac{P_x}{P_y}$$

जहाँ X तथा Y दो उपभोग वस्तु हैं.

उपभोक्ता B की अधिकतम संतुष्टि दशा

$$[MRS_{xy}]_B = \frac{P_x}{P_y}$$

अनुकूलतम आवंटन दशा में

$$[MRS_{xy}]_A = [MRS_{xy}]_B$$

- **पूर्ण प्रतियोगिता एवं साधनों के अनुकूलतम आवंटन की दशा**

उत्पादक A की संतुलन दशा

$$[MRTS_{LK}]_A = \frac{P_L}{P_K}$$

जहाँ L तथा K दो उत्पत्ति साधन हैं.

उत्पादक B की संतुलन दशा

$$[MRTS_{LK}]_B = \frac{P_L}{P_K}$$

अनुकूलतम आवंटन दशा में

$$[MRTS_{LK}]_A = [MRTS_{LK}]_B$$

निष्कर्ष

उक्त विवरण से स्पष्ट है कि पेरेटो की दृष्टि से अधिकतम सामाजिक कल्याण तभी प्राप्त होगा, जबकि सीमांत शर्तें एवं समस्त शर्तों की पूर्ति होती है। किंतु यह परेटो अनुकूलतम भी कोई विशेष स्थिति नहीं है पैरिटो अनुकूलतम के दशाओं का समस्त विश्लेषण वर्तमान आय वितरण की मान्यता पर आधारित है। आय वितरण में परिवर्तन हो जाने से भिन्न-भिन्न पैराटों अनुकूलतम प्राप्त होंगे जिनमें विभिन्न पदार्थों की पहले से भिन्न मात्राएं उत्पादित की जाएगी और परिणामतः साधनों का आवंटन भी भिन्न होगा पेरेटो ने कोई ऐसा मानदंड प्रतिपादित नहीं किया जिसके आधार पर यह निश्चित किया जा सके कि नया अनुकूलतम पहले के पेरेटो अनुकूलतम से श्रेष्ठ है या नहीं ।ऐसा निश्चय आय वितरण के विषय में कुछ नैतिक मान्यताओं के आधार पर किया जा सकता है परंतु नैतिक मान्यताओं का पेरेटो के मानदंड में कोई स्थान नहीं है।

THANK
YOU!